अनुक्रमणिका

1. विषय प्रवेश 7
2. लेखक परिचय 15

जिज्ञासा खंड (अ)

3. शुक्र की उत्पत्ति कथा 17
4. शुक्र का वैदिक स्वरूप 18
5. शुक्र का पौराणिक स्वरूप 19
6. शुक्र का खगोलीय स्वरूप 22
7. शुक्र का ज्योतिषीय स्वरूप 23
8. शुक्र के अचूक फलादेश 30

संहिता खंड (ब)

9. शुक्र मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में जन्मगत फल 34
10. शुक्र मेष राशि भरणी नक्षत्र में 35
11. शुक्र मेष राशि, कृत्तिका नक्षत्र 36
12. शुक्र वृष राशि, कृत्तिका नक्षत्र में 36
13. मेदनीय ज्योतिष के परिप्रेक्ष्य में शुक्र शुक्रोदय के फल नक्षत्र के अनुसार 59
14. गोचर जन्म लग्न से देखना चाहिए? अथवा चंद्रलग्न में देखना चाहिए? 72
15. गोचर के शुक्र का फल 75
16. शुक्र की महादशा में अन्य ग्रहों की अंतर्दशा का फल 90
17. शुक्र की अंतर्दशा में शुक्रादि ग्रहों की प्रत्यन्तरदशा का फल 97

जातक खंड (स) जन्मकुंडलीगत फलादेश

18. लग्नस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 100
19. द्वितीयस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 120
20. तृतीयस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 138

21. चतुर्थस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 158
22. पंचमस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 178
23. षष्ठस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 197
24. सप्तमस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 218
25. अष्टमस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 238
26. नवमस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 257
27. दशमस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 276
28. एकादशस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 295
29. द्वादशस्थ शुक्र के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता 313

उपचार खंड (द)

30. शुक्र के वैदिक मंत्र का प्रयोग 333
31. शुक्र का तांत्रिक मंत्र 334
32. शुक्र के अन्यमंत्रप्रयोग 336
33. शुक्र स्तवराज स्तोत्रम् 337
34. स्तोत्र पाठ 337
35. फलश्रुतिः 338
36. शुक्र नामावलिस्तोत्रम् 338
37. स्तोत्र पाठ 338
38. फलश्रुति 339
39. ध्यानम् 339
40. कवच पाठ 339
41. फलश्रुति 340
42. शुक्रशान्ति प्रयोग 340
43. श्रीशुक्र अष्टोत्तरशत नामावली 341
44. कनकधारा यंत्र, श्रीयंत्र एवं कुबरेयंत्र 342
45. अथ कनकधारा स्तोत्रम् 344
46. कनकधारा स्तोत्र 346
47. कनकधारा यंत्र प्रयोग 348
48. यंत्र पूजन काल 349
49. पूजन सामग्री 350
50. कनकधारा मंत्र 350
51. लक्ष्मी प्राप्ति का अचूक माध्यम "श्रीयंत्र" 351
52. श्रीसूक्तम् 352
53. अष्टसिद्धि एवं नवनिधिनाथ धनेश कुबेर की सम्पूर्ण साधना 356
54. कुबेर यंत्र के पूजन क्रम 359

विषय प्रवेश

ज्योतिष शास्त्र की प्राचीनता वेदों में सिद्ध है। प्राचीन काल से ही वेद के छह अंगों में ज्योतिष शास्त्र मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है। वैदिक काल और वराहमिहिर के बीच 18 ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तक धुरन्धर आचार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है।

सूर्यः पितामहो व्यासो, वसिष्ठोऽत्रिपराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिः मनुरंगिरा॥
लोमेशः पोलिशश्चैव, च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते, ज्योतिष्: शास्त्र प्रवर्तकाः॥

सूर्य सिद्धांत (भूमिका)

पर दुर्भाग्य यह है कि इन सब ज्योतिष शास्त्र प्रवर्तक आचार्यों का क्रमिक इतिहास हमें प्राप्त नहीं है। चार-पाँच आचार्यों को छोड़कर बाकी सभी की वास्तविक कृतियां भी ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों को प्राप्त नहीं हैं। केवल नाम ही चर्चित है। कई विद्वानों के ग्रन्थ उपलब्ध हैं तो उनके काल का पता नहीं। जिनमें **बृहद्पाराशर होराशास्त्र** के रचयिता पराशर, **भृगुसंहिता** के रचयिता महर्षि भृगु, **सत्यजातकम्** के रचयिता सत्याचार्य, मीनराज कृत **बृहद् यवनजातक** इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष शास्त्र को नई ऊंचाइयां प्रदान करने वाले, तीनों स्कन्धों के निष्णात ज्ञाता दैदीप्यमान सूर्य के समान तेजस्वी वराहमिहिर का सम्पूर्ण साहित्य हमें विधिवत प्राप्त है। परंतु उनका काल भी संदिग्ध है। अंग्रेजों के अनुयायी इतिहासकार उनका जन्म ईसा की पांचवीं शताब्दी का मानते हैं जबकि वराहमिहिर ईसा पूर्व राजा विक्रमादित्य उर्फ चन्द्रगुप्त मौर्य के राजकीय पंडित थे और वर्तमान में महरौली (मिहिरालय) में स्थित कुतुबमीनार (दिल्ली में) उनकी प्राचीन वेधशाला थी। जिसपर जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत शोध ग्रंथ भोज संहिता के लेखक द्वारा लिखा गया जो प्रकाशित हो चुका है।

वैदिक काल के पश्चात वराहमिहिर के पूर्व ज्योतिष की स्थिति

यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि ज्योतिष शास्त्र के प्रति वराहमिहिर का दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उन्होंने अपने साहित्य में प्रसंगवश उदारता पूर्वक अनेक ज्योतिषाचार्यों का नामोल्लेख स्थान-स्थान पर किया है। बृहत्संहिता, पंचसिद्धान्तिका एवं बृहज्जातक में वराहमिहिर ने अपने पूर्ववर्ती अनेक ज्योतिष ग्रन्थों के नाम भी

42. **पूर्वाफल्गुनी नक्षत्र का द्वितीय चरण**–पूर्वाफाल्गुनी का स्वामी शुक्र है। इसके द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। ऐसा जातक राजमान्य एवं परम वैभवशाली होता है। जातक अपनी वाक्पटुता के कारण राजसरकार में दबदबा रखता है।

43. **पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का तृतीय चरण**–पूर्वाफाल्गुनी का स्वामी शुक्र है। इसके तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। ऐसा जातक राजमान्य एवं परम वैभवशाली होता है। जातक पूर्ण ऐय्याश होता है तथा जीवन में काम पाने वाले सभी प्रकार के ऐश्वर्यपूर्ण संसाधनों का स्वामी होता है।

44. **पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण**–पूर्वाफाल्गुनी का स्वामी शुक्र है। इसके चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। ऐसा जातक राजमान्य एवं परम वैभवशाली होता है। जातक महत्त्वाकांक्षी होगा। जिसके कारण बड़े लोगों से टकराव होगा।

पूजन सामग्री–चंदन, गंध, चम्पक पुष्प, गुग्गुल, घृत, पायस, नैवेद्य, बिल्वपत्र, पीतलपात्र, यव, माष, गौ, स्वर्णदान।

जप संख्या–10000

जप मंत्र– **ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा द्रेदन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥11॥**

विशेष–भाजन दान करने से इस नक्षत्र की शांति होती है।

समिधा–पलाश वृक्ष की समिधा में दशांश हवन करना चाहिए।

'ॐ पूर्वाफाल्गुन्यै स्वाहा' अंत में औदुम्बरयुक्त पायस घी से शुक्र के मंत्र की आहुति देनी चाहिए।

शुक्र सिंह राशि : उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में
(अंश 146.40 से 150.00 तक)

उत्तराफाल्गुनी का देवता अर्यमा है, स्वामी सूर्य है। उत्तराफाल्गुनी स्त्री जाति का, ध्रुव (स्थिर) संज्ञक, मनुष्यगण वाला नक्षत्र है।

45. **उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण**–उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य है। इसके प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। जातक परमतेजस्वी विद्वान होगा। ऐसा व्यक्ति महान धर्मात्मा एवं अध्यात्म क्षेत्र का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।

शुक्र कन्या राशि : उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में
(अंश 150 से 160 तक)

कन्या राशि में शुक्र नीच का कहलाता है, अतः अशुभ फल देगा। कन्याराशि के 27 अंशों तक शुक्र परमनीच का कहलाता है। इस शुक्र के साथ यदि बुध केन्द्रवर्ती हो तो **'नीचभंगराजयोग'** एवं **भद्रयोग** के कारण जातक निश्चय ही राजा या राजा के समकक्ष होता है।

46. **उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का द्वितीय चरण**–उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य है। इसके द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जातक परमतेजस्वी विद्वान होगा। शत्रु जातक का चरित्र संदिग्ध होगा।

47. **उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का तृतीय चरण**–उत्तराफाल्गुनी का स्वामी सूर्य है। इसके तृतीय चरण का स्वामी शनि है। जातक परमतेजस्वी विद्वान होगा। परंतु जातक का चरित्र संदिग्ध होगा।

48. **उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण**–उत्तराफाल्गुनी का स्वामी सूर्य है। इसके चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। जातक परमतेजस्वी विद्वान होगा। ऐसा व्यक्ति महान धर्मात्मा एवं अध्यात्म क्षेत्र का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।

पूजन सामग्री–कपूर, कुमकुम, गंध, रक्तपुष्प, घृत, पायस, नैवेद्य, केशर, सुवर्ण, रजत, गाय, दान, अन्न, वस्त्र।

जप संख्या–5000

जप मंत्र– **ॐ दैव्या वध्वर्यूऽआ गत ॐ रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञ ॐ समंजाथे। तं प्रक्नथा अयं वेनः चित्रं देवानाम्॥12॥**

विशेष–अन्नदान से इस नक्षत्र के देवता प्रसन्न होते हैं।

समिधा–**'प्लक्ष'** वृक्ष की समिधा से दशांश हवन करना चाहिए।

'ॐ उत्तराफाल्गुन्यै स्वाहा' अंत में अर्कयुक्त पायस, घी से सूर्य मंत्र की आहुति देनी चाहिए।

शुक्र कन्या राशि : हस्त नक्षत्र में
(अंश 160 से 173.20 तक)

हस्त–हस्त नक्षत्र पुरुष जाति का, देवगण वाला नक्षत्र है। इस नक्षत्र का देवता सविता एवं स्वामी चंद्र है।

49. **हस्त नक्षत्र का प्रथम चरण**–हस्त नक्षत्र का स्वामी चंद्रमा है। इसके प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। ऐसा जातक कलाप्रेमी, रसिक मिजाज वाला होता है। ऐसा जातक मिथ्याभिमानी व युद्ध प्रिय होता है।

व्यक्ति की मृत्यु होती है। माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु बचपन में होती है। जो जीवित रहे उसका सुख 45 वें वर्ष तक मिलता है।

—*ह. चै. कार्ल*

- ❑ चतुर्थस्थ शुक्र वाला व्यक्ति भाइयों को सुख देता है। —*हिल्लाजातक*
- ❑ चतुर्थभावगत शुक्रवाला व्यक्ति गाय-बैल पालकर दूध-दही का व्यापार करता है। धनधान्य में संपन्न, घोड़े-वाहनों से युक्त, भाग्यवान मित्र, बुद्धिमान तथा आप्तों पर स्नेह करने वाला होता है। इसे मातृसुख भी मिलता है। —*गोपालरत्नाकर*
- ❑ यदि चतुर्थभाव में शुक्र हो तो जातक वैभव संपन्न होता है तथा उसे माता का पूर्ण सुख मिलता है। शुक्र वाहन का कारक ग्रह हैं। जातक को पैतृक संपत्ति भी मिलती है तथा माता-पिता दोनों का सुख लंबे समय तक मिलता है। —*रावण संहिता/पृ.*
- ❑ जन्मकुंडली के चौथे घर में शुक्र होने से औरत एक ही वक्त में दो किस्म की होगी। एक बूढ़ी माँ की तरह बड़ी उम्र की और दूसरी ऐश आराम की मालिक हरफनमौला जमाना की बेगम होगी। मगर औलाद की फिक्र में किल्लत ही रहेगी। —*असली प्राचीन लाल किताब/पृ.*
- ❑ चतुर्थ स्थान गत शुक्र रहने से जातक रूपवान, बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी, विद्वान, सुखी और क्षेत्र, ग्राम, एवं वाहनादि से संपन्न होता है। ऐसे जातक के घर दूध की प्रचुरता रहती है और भोजनादि अच्छे-अच्छे मिलते हैं। वह अपने कुटुंबजनों का प्रिय और मित्रों से युक्त होता है। उसे अच्छी स्त्री, भोग-शक्ति और धन की अच्छी प्राप्ति होती है। ऐसा जातक देवभक्त, ईश्वर साधना में प्रेम रखने वाला और राजा से पूज्य होता है।

—*ज्योतिष रत्नाकर (देवकी नंदन सिंह)/पृ.*

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में

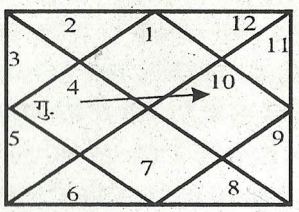

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने-से परमपाप व अशुभफल देने वाला माना गया है। यहां चतुर्थ स्थान में शुक्र केन्द्रवर्ती होगा। शास्त्रकार कहते हैं–

भवति मदनमूर्तिः वल्लभः कामिनीनाम्,
सकल जनसमर्थो, दीर्घ जन्मा विधेयः।
गज विषय गुणज्ञो, द्रव्यमुख्य प्रधानः,
सघनकनकपूर्णो, दैत्यामो यस्य केन्द्रे॥

—मानसागरी श्लोक 11/पृ.244

ऐसा जातक उच्च वाहन, जमीन-जायदाद का स्वामी होता है। जातक बुजुर्गों की संपत्ति पाने वाला **'कुल का दीपक'** संतान से सुखी होता है। ऐसा जातक स्त्रियों का प्रिय और एक समय में दो स्त्रियों से कामक्रीड़ा करने वाला, काम कला मर्मज्ञ होता है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार ऐसे जातक के उत्तम संतति अधिक मात्रा में होती है। संतान पढ़ी-लिखी होती है। जातक की माता लंबी आयु वाली होगी।

निशानी–अपना इश्क औरतों का।

दशा–शुक्र की दशा में वाहन सुख मिलेगा। धन की प्राप्ति होगी। सुख में वृद्धि होगी। पत्नी पक्ष से लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ व्यक्ति को उच्च शिक्षा दिलाएगा। जातक को माता-पिता दोनों का सुख मिलेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–यदि शुक्र के साथ चंद्रमा हो तो **'यामिनीनाथ योग'** बनेगा। जातक की माता सुंदर व समझदार होती है। जातक माता का विशेष भक्त होता है। माता की उम्र लम्बी होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ यदि मंगल हो तो नीच का होगा। फिर भी कृषि भूमि व माता से लाभ होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होनें जातक बुद्धिबल में तेज रहेगा परंतु षड्यंत्र से सावधानी करनी होगी।
5. **शुक्र+बृहस्पति**–यदि शुक्र के साथ बृहस्पति हो तो **'हंसयोग'** बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य संपन्न होगा। उसे पैतृक संपत्ति एवं राज्य सरकार से सहयोग मिलेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ राज्येश+लामेश शनि जातक को व्यापार में लाभ दिलाएगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु माता को बीमारी देगा। वाहन से दुर्घटना भी कराएगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु शारीरिक अस्वस्थ देगा। जातक को अचानक हृदय रोग होगा।

धनी परिवार से होगी। जातक की स्त्री यदि किसी का शाप दे दें तो वह अवश्य पूरा होगा।

निशानी–जली मिट्टी की हालत, स्त्री। पच्चीस वर्ष की आयु के बाद विशेष शुभ रहे।

दशा–शुक्र यहां मारकेश का काम करेगा। सावधानी अनिवार्य है। जीवनसाथी से विछोह संभव है। धन की हानि भी हो सकती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य होने से **'संततिहीनयोग'** एवं **'विद्याभंगयोग'** बनता है। जातक के विद्याध्ययन में बाधा आएगी। प्रथम संतति विलंब से होगी।
2. **शुक्र+चंद्र**–यदि शुक्र के साथ चंद्रमा हो तो नीच का चंद्र **'सुखी हीन योग'** की सृष्टि करेगा। जातक की मां बीमार रहेगी। उसमें रुपया खर्च होगा। जातक चोरी करेगा। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–यदि शुक्र आठवें मंगल के साथ हो तो **'धनहीन योग'** के साथ **'लग्नभंग योग'** बनेगा और कुंडली प्रबल मंगलिक होगी। ऐसे जातक को विलंब विवाह या कई बार अविवाह की स्थिति बनती है। मंगल का उपाय करने पर शीघ्र विवाह होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'पराक्रमभंगयोग'** एवं **'विपरीत राजयोग'** दोनों बनाएगा। जातक धनवान होगा पर पीठ पीछे निंदा होगी।
5. **शुक्र+बृहस्पति**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'भाग्यभंगयोग'** एवं **'विपरीतराजयोग'** दोनों बनाएगा। ऐसे जातक का भाग्योदय संघर्ष के बाद होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'राजभंगयोग'** एवं **'लाभभंगयोग'** योग बनाएगा। जातक को व्यापार में लाभप्राप्ति में भयानक घाटा होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक को **'सेक्स रोग'** होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक स्त्री-मित्रों से परेशान रहेगा।

उपाय– 1. पत्नी को बिना वजह तंग न करें।
2. शुक्र संबंधी वस्तुओं का दान न लें।
3. शुक्रवार के दिन गन्दे नाले में तांबे का पैसा या पुष्प गिराएं।
4. बछड़े वाली गाय का दान करें। गाय सफेद हो एवं अंगहीन न हो।
5. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
6. तेजीगति के वाहन में सफर न करें।
7. **'शुक्र कवच'** का नित्य पाठ करें।

8. शुक्र शांति का प्रयोग करें।
9. शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
10. यदि मृत्यु तुल्य कष्ट हो तो शक्कर, दही, दूध, शहद व पंचामृत से रुद्राभिषेक करावें।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में

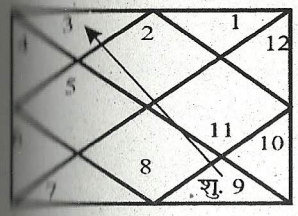

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्ठेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभफलकारी भी है, पर लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां धनु राशि में होकर द्वितीय (धन) भाव (मिथुन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

लग्नभंग योग–लग्नेश शुक्र अष्टम में जाने से पत्नि स्त्री से डरकर रहने वाला, ससुराल की नैय्या डूबोने वाला, कृतघ्न, भाई-बहनों से झगड़ने वाला, परिश्रम का फल न पाने वाला, हतोत्साही व्यक्ति होता है। ऐसा जातक शत्रुओं से भयभीत रहता है।

धर्म योग–छठे घर का स्वामी होकर शुक्र आठवें जाने से यह योग बना। आयु की दृष्टि से यह योग शुभ है।

सावधानी–किसी की कसम खाना, किसी की जमानत देना ठीक नहीं रहेगा। बिना बात किसी की पंचायती करना भी ठीक नहीं रहेगा।

उपाय– 1. गाय दान करने से किस्मत चमकेगी।
2. तांबे का पैसा और सफेद पुष्प 27 शुक्रवार गंदे पानी में डालते रहें और मंदिर में सिर झुकाते रहें तो शत्रु अपने आप (खुद की हरकतों से ही) नष्ट होंगे।

दशा–शुक्र की दशा में उत्साह, धैर्य व बुद्धि चातुर्य से योजना में सफलता मिलती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–**'सुखभंग योग'** के कारण सुख प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–इस युति से व्यक्ति शराबी होगा। मित्रों से धोखा मिलेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–गुप्तरोग की संभावना, पत्नी से अनबन संभव।
4. **शुक्र+बुध**–**'धनहीन'** व **'संतानहीन योग'** के साथ अष्टम भावस्थ बुध सन्तान एवं विद्या प्राप्ति से असंतोष देगा।
5. **शुक्र+बृहस्पति**–यह युति ज्यादा शुभ नहीं है। ऐसा जातक गुप्तांग में बीमारी भोगने वाला होता है। स्वयं की पत्नी में अनबन कर अन्य स्त्रियों पर खर्च